आशा दर्शन, असम
एक रिपोर्ट

दिनांक ५ अक्टूबर की शाम गोविन्द, रंजना (पत्नी), स्निग्धा (पुत्री) और मैं गुवाहाटी पहुंचे, यहां बीजू उपस्थित थीं, रात्रि विश्राम हमने श्री रविन्द्र भाई की संस्था तामुलपुर आंचलिक ग्रामदान संघ 'टैग्स' के कार्यकर्ता निवास पर किया. यहीं रात्रि में मणिपुर से आयीं सुश्री मेधावती जी से उनके काम के बारे में काफी वार्ता हुई, आशा से सहयोग के लिये उनका प्रस्ताव गुन्टूर की बैठक में प्राप्त हुआ था. हमने उन्हे सलाह दिया कि आशा के प्रपोजल फार्म पर समस्त जानकारी उपलब्ध हमें करायें. अगले दिन ६ अक्टूबर को हम प्रसिद्ध कामाख्या देवी, बालाजी, बशिष्ठ आश्रम, शंकरदेव कलाक्षेत्र इत्यादि घूमने के बाद सायं ८ बजे गुवाहाटी से ९० किलोमीटर स्थित आशादर्शन के कार्यालय तामुलपुर पहुंचे. तामुलपुर नवनिर्मित बक्सा जिले का एक ब्लॉक है जहां 'आशादर्शन' ने एक मकान किराये पर ले रखा है और यहीं से सारी गतिविधियां संचालित होती हैं.

रात्रि में हमने सभी कार्यकर्ताओं से परिचय एवं उनके काम की जानकारी ली और अगले दिनों की योजना बनाई जिससे सभी सेन्टर पर हमारा जाना सम्भव हो सके. गोविन्द को एकाउन्ट का काम देखना था एवं आशा की एकाउटिंग सिस्टम से बीजू की टीम विशेषकर प्रनब को परिचित कराना था अतः यह तय हुआ कि वल्लभ और बीजू केन्द्रों पर जायेंगे एवं गोविन्द ऑफ़िस में रूक कर एकाउन्ट का कार्य करेंगे.

७ अक्टूबर को सुबह ८ बजे मैं एवं बीजू छोटी बाइक हीरो होन्डा प्लीज़र से गांव देखने चले (यह बाइक पिछले माह सेविका निकेतन नामक संस्था से एडवांस लेकर ली गई है जिसका मूल्य रू. ४३000.00 है) आशा दर्शन के केन्द्र एवं स्वयं सहायता समूह ५0 गावों के लगभग ४0 किलोमीटर क्षेत्र में फैले हुये हैं, इस कार्य में यह बाइक काफी सहायक साबित हो रही है. तामूल पुर से लगभग १0 किलोमीटर जिसमे से आधी दूरी कच्चा रास्ता है चल कर हम नमटी केन्द्र पर पहुंचे.

<u>नमटी शिक्षण केन्द्रः</u>

जब हम पहुंचे, समय ९.00 था, कुछ बच्चे धान के खेतों के बीच पगडंडी से आते दिखे. विद्यालय गांव की जमीन पर गांव वालें के सहयोग से बने एक कमरे जो १२ फीट गुणे २0 फीट का बांस और टिन का बना है में चलता है इसके अगल बगल काफी खाली जमीन भी है. आज तीनों शिक्षक एवं कुल ४३ बच्चे जिसमें १८ लड़कियां थीं, आये थे. कुछ देर में गांव वाले भी वहां आ गये, उनसे एवं बच्चों से बात चीत करने पर निम्न जानकारियां मिलीं:

- यह विद्यालय पिछले ४ वर्ष से चल रहा है, इस स्थान पर विद्यालय को जनवरी 0६ मे लाया गया है इसके पहले यह गांव के बीच चलता था जहां जगह की कमी थी.

- यहां कुल ११६ बच्चे हैं, आज बच्चे कम आये हैं क्योंकि पिछले दिन लखीपूजा(लक्ष्मी पूजा) थी, (अन्य केन्द्रों पर भी इसी तरह की सूचना मिली, मैने पाया कि असम के इस भाग में इस पूजा का काफी महत्व है और कहीं कहीं एक सप्ताह तक कार्यक्रम चलता है)
- यहां मुख्यतः मुस्लिम एवं बंगाली लोगों की जन संख्या है, मुख्य पेशा खेती एवं मजदूरी है.इस वर्ष बारिश कम होने से धान की फसल प्रभावित हुई है जिससे समस्या है.
- यहां से ३ किलोमीटर तक कोई सरकारी स्कूल नहीं है.३ किलोमीटर पर 'जारगांव' गांव में मिडिल स्तर का स्कूल है. यहां से बच्चे कक्षा ४ पास करने के बाद जारगांव पढ़ने जाते हैं. अभी तक यहां से लगभग २0 बच्चे आगे की पढ़ाई कर रहे हैं.
- नवम्बर 0५ से यहां स्कूल में मिड डे मील दिया जाने लगा, परीक्षा अवधि एवं अवकाश को छोड़ कर लगभग सभी दिन १00 ग्राम च्यूड़ा (Flat Rice) १00 मिली लीटर दूध एवं ५0 ग्राम गुड़ दिया गया. ३0 जून को विद्यालय १५ दिन के ग्रीष्मावकाश के लिये बन्द किया गया उसके बाद से अब तक मिड डे मील नही दिया गया है.
- आर्मी ने इसी केन्द्र के पास की जमीन पर एक कम्युनिटी सेन्टर बनाने की घोषणा की है, जिस पर काम अगले माह में धान की फसल कटने के बाद प्रारम्भ हो जायेगा. इस सेन्टर का प्रयोग गांव वाले अपनी स्वेच्छा से करेंगे.विद्यालय भी इसी में चलेगा.
- इस गांव में पीने के पानी की समस्या है, कुयें का पानी पीने योग्य नहीं रहता है.वैसे केन्द्र पर एक वाटर फ़िल्टर है, किन्तु रखने के लिये सुरक्षित जगह नहीं होने के कारण पास के ही एक परिवार में रखा है, मिड डे मील का सामान भी वहीं रखा जाता है.
- पाउडर के दूध को बनाने के लिये प्रतिदिन गर्म पानी की व्यवस्था गांव वाले करते हैं.
- विद्यालय में दो ब्लैक बोर्ड हैं.
- इस गांव में आशा दर्शन के स्वयं सहायता समूह हैं.

बच्चों से बात करके लगा कि उनके ज्ञान का स्तर सामान्य है, और वे मिड डे मील कार्यक्रम के प्रति काफी आशान्वित हैं. शिक्षकों ने बताया कि जब मिड डे मील दिया जाता था तो उपस्थिति बढ़ जाती थी और बच्चे अपने साथ छोटे बच्चों को भी लेकर आते थे. (लगभग इसी तरह की सूचना मुझे आगे के सभी केन्द्रों पर मिली). बच्चों ने २ गीत भी सुनाया. थोड़ी आसामी भाषा मुझे समझ मे आने के कारण संवाद आसान हो गया था, किन्तु फिर भी असुविधा होने पर बीजू ने सहायता की.

हम वापस वहां से दूसरी दिशा में २५ किलोमीटर कुमारीकाटा आ गये यहां पर टैग्स का मुख्य कार्यक्षेत्र एवं प्रशिक्षण केन्द्र है, इसी परिसर में

एक कमरा श्री रविन्द्र भाई ने आशादर्शन को निःशुल्क उपलब्ध कराया है जहां आशा दर्शन की २ कार्यकत्री रहती हैं. यहां से मुझे केन्द्रों तक ले जाने की कमान प्रणती धर जो Education Coordinator हैं ने सम्हाली.(बीजू को अपने किसी कार्य एवं मीटिंग्स के कारण अगले दिन दिल्ली जाना था अतः वे मेरे साथ आगे नही जा सकीं) कुमारीकाटा से ९ किलोमीटर चल कर हम शान्तिपुर द्वितीय गांव पहुंचे.

शान्तिपुर द्वितीय केन्द्रः

यह लगभग १५0 घरों की बस्ती है जिसमे एक 'वेन्चर स्कूल' काफी समय से चल रहा था किन्तु पिछले ६ वर्षो से बन्द था. यहां एक कमरा गांव की जमीन पर गांव वालों के सहयोग से बना है, अप्रैल 0६ से आशा दर्शन ने यहां अपना केन्द्र गांव वालों की मांग पर प्रारम्भ किया है. यहां मुख्यतः बंगाली, दलित एवं नेपाली लोग रहते हैं जिनकी आय का मुख्य स्रोत मजदूरी है, ये लोग भूटान जाकर मजदूरी या पास की कालानदी में पत्थर तोड़ने का काम करते है. क्षेत्र की विपन्नता स्पष्ट दिख रही थी.यहां दो शिक्षक हैं जिन्हे अप्रैल 0६ माह में गांव वालों की सहमति से नियुक्त किया गया है.यहां मिड डे मील नहीं दिया गया था.कुल १४५ बच्चे नामांकित है आज ८२ बच्चे आये थे जिसमें ३६ लड़कियां थीं.गांव वालों एवं शिक्षकों से बात हुई प्रमख जानकारी निम्न हैः

- लगभग औसत १२0 बच्चे प्रतिदिन आते हैं, आज लक्ष्मीपूजा के कारण उपस्थिति कम थी.
- एक और शिक्षक की आवश्यकता है.कक्षा ४ पास करने के बाद बच्चे ३ किलोमीटर स्थित जूनियर स्कूल पर जायेंगे.
- इस पूरे गांव मे आज तक कोई मैट्रिक पास नही कर पाया है.
- मिड डे मील की आवश्यकता है साथ में स्वास्थ्य के लिये भी काम करने की आवश्यकता है.मलेरिया, पीलिया, कुपोषण मुख्य समस्या है.मिड डे मील प्रारम्भ होने की स्थिति में गांव वाले पानी गर्म करने की व्यवस्था स्वयं करेंगे.

यहां के छोटे बच्चों को अभी खेलकूद एवं गीत ही सिखाया जा रहा है, बड़े बच्चों का स्तर बहुत अच्छा नहीं है. अभी कक्षायें चलते अधिक समय नहीं हुआ है अतः संतोषजनक है.बच्चों ने हमारे साथ बिल्ली के शिकार करने के तरीके पर एक खेल भी खेला.शनिवार को आशादर्शन के सभी विद्यालयों में खेलकूद का कार्य कम होता है और विद्यालय १ बजे तक ही चलता है.शिक्षको ने बताया कि हम बच्चों से 'बाल मेला' की तैयारी करा रहे हैं.शिक्षकों के अनुसार सितम्बर में हुये शिक्षक प्रशिक्षण से उन्हें लाभ हुआ है विषेशकर छोटे बच्चों को अंक, अक्षर इत्यादि समझाना आसान हो गया है.

यहां से हम १२.३0 पर चले क्योंकि अभी सत्यनारायणपुर चलते हुये मिलने की सम्भावना थी. सत्यनारायणपुर की सीधी दूरी २ किलोमीटर ही है किन्तु बाइक जाने लायक रास्ता ५ किलोमीटर का था.

सत्यनारायणपुर केन्द्र ः

यह एक बड़ा परिसर है, जिसमे ५ कमरे है एक नया शेड पिछले माह में गांववालों से सहयोग के रूप में मिले धान से मिला है.यह केन्द्र काफी पहले टैग्स का बुनाई केन्द्र था, यहां आशा दर्शन का केन्द्र गांववालों के सहयोग से प्रारम्भ हुआ था. आसपास प्रमुखता से बंगाली, नेपाली, असमी, बोड़ो लोग रहते हैं.यहां लगभग २00 परिवार है जिसमें जनसंख्या लगभग १३00 है.आय का मुख्य स्रोत खेती है.विद्यालय परिसर में पिछली रात लक्ष्मीपूजा मनायी गयी थी और सारी रात नाटक एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये थे, अभी भी पूजास्थल पर बांस बल्ली पड़े थे.कक्षा में कुछ बच्चे मुझे आराम से सोते मिले, शेष खेल में व्यस्त थे.यहां कुल २५0 बच्चे हैं किन्तु आज १५२ बच्चे आये थे.यहां अभी ५ शिक्षक हैं और कक्षा ५ तक कक्षा चलती है, इस वर्ष से कक्षा ६ और ७ चलाने की योजना है. मिड डे मील जून 0६ तक दिया गया था.यहां एक बड़ा से टोकरा जिसकी क्षमता ५ क्विंटल की थी रखा है, जिसमें गांव के लोग स्वेच्छा से धान दे जाते हैं.इस विद्यालय में काफी हैण्डीक्रैफ्ट सामान रखे थे जिन्हें शिक्षकों एवं बच्चो ने स्वयं बनाया है.विद्यालय में दो वाटर फिल्टर है, जिसका प्रयोग बच्चे करते हैं.कुछ खिलौने भी हैं जिनसे बच्चे खेल रहे थे.शिक्षकों एवं गांव वालों से बातचीत से अन्य सूचनाये भी मिलीं जो निम्न हैंः

- स्थानीय विधायक ने इस विद्यालय में और कक्षा बनाने के लिये ५0000 देने की घोषणा की है.
- मिड डे मील से बच्चों की उपस्थिति बढ़ जाती है, अक्सर २५0 की जगह २८0 बच्चे तक हो जाते हैं क्योंकि छोटे बच्चे भी १२ बजे स्कूल आने लगते हैं.
- यहां से आगे की पढाई करने के लिये काफी दूर जाना पढता है अतः गांव वाले इसी विद्यालय में ७ तक की कक्षा चाहते हैं.
- बच्चों की संख्या अधिक होने के कारण मिड डे मील देने में एक घंटे का समय लग जाता है. अतः यह स्कूल ९ बजे से ही चलता है.
- ऊपर की कक्षाओं को पढ़ाने के लिये और शिक्षकों की आवश्यकता है.
- अगले सत्र में नई कक्षा चलने के कारण बच्चों की संख्या और बढ़ेगी.

सत्यनारायणपुर विद्यालय में मैं ४ बजे तक रहा, जबकि बच्चों की छुट्टी २ बजे कर दी गयी थी. शिक्षकों एवं गांव वालों से काफी विस्तार से बात हुई, ये लोग यहां की शिक्षा प्रणाली एवं मिड डे मील कार्यक्रम से प्रसन्न दिखे और पुनः प्रारम्भ करने के लिये कह रहे थे.

गांव का यथासम्भव सहयोग एवं अभिभावकों का मार्गदर्शन मिलता रहता है.मैने सभी लोगों को 'आशा' के बारे में विस्तार से बताया जिससे वे सभी अत्यंत प्रभावित थे.यहां के बच्चों का शैक्षिक स्तर काफी अच्छा है साथ ही इनकी सांस्कृतिक तैयारी भी अच्छी है. बच्चों ने मुझे अपने द्वारा बनाये हुये कुछ चित्र एवं रूमाल भेंट किये.

यहां से हम वापस २२ किलोमीटर चलकर तामुलपर आ गये.इस समय रंजना, स्निग्धा, हिमानी, सबिता इत्यादि लक्ष्मी पूजा देखने गये हुये थे.इन लोगों के वापस आने पर भोजन के बाद सायं ८ बजे से हम आपसी बातचीत के लिये बैठे, जिसमें प्रनब, गोविन्द, बीजू, प्रणती, सबिता, हिमानी, रंजना, वल्लभ, अम्बिका, निवेदिता शामिल थे, हम गम्भीर चर्चा में व्यस्त थे, स्निग्धा की शैतानियां माहौल को हल्का बनाने में सहायक हो रही थीं. मैने और गोविन्द ने आज दिन भर के अनुभवों को बताया. सभी कार्यकर्ताओं की संस्था के अन्दर क्या मुख्य भूमिका है और रहेगी यह तय हुआ. मिड डे मील कार्यक्रम की भी विवेचना गयी. और बजट पर भी चर्चा हुई.यह स्पष्ट हुआ कि अनेक कारणों, मीटिंग्स तथा व्यस्तता के कारण बीजू का समय कम मिल पा रहा है.बजट के अलग अलग हेड के बारे में टीम को पूरी तरह जानकारी नहीं थी, मिड डे मील का पैसा विलम्ब से आने के कारण यह कार्यक्रम नवम्बर ०५ से प्रारम्भ हुआ और जून में धनाभाव के कारण बन्द करना पड़ा, शिक्षकों का मानदेय अप्रैल ०६ तक दिया जा सका जबकि बीजू को मानदेय मार्च ०६ तक ही मिला है.सभी ने महसूस किया कि बजट को पूरी टीम की राय से पुनः बनाना चाहिये.हमने शिकायत की कि आपकी रिपोर्ट आने में विलम्ब होता है तो सभी ने स्वीकार किया. इसका कारण बीजू की व्यस्तता बतायी गयी. और यह तय हुआ कि अब रिपोर्ट भेजने के लिये बीजू पर निर्भरता नही रहेगी और प्रनब जो जुलाई ०६ से आशादर्शन मे आयें हैं वे टीम के साथ बैठकर त्रैमासिक रिपोर्ट तैयार करेंगे और 'आशा' को भेजेंगे.प्रनब एकाउन्ट का भी काम देखेंगे.गोविन्द ने एकाउन्ट के बारे में सभी को बताया. बीजू, प्रणती एवं सबिता ने बताया कि एक गांव गारूघूटू जहां आशादर्शन काम कर रही है एक 'वेन्चर स्कूल' गांव वाले चला रहे हैं लेकिन कोई सहायता न मिलने के कारण अब बन्द होने की स्थिति में है, पूरी टीम इस विद्यालय को आंशिक सहायता दिये जाने के पक्ष में थी. अगले दिन रविवार केन्द्र बन्द रहने थे अतः मैने गारूघूटू जाने की इच्छा जताई, रात्रि के २ बज गये थे अतः हमने बजट पर होने वाली चर्चा स्थगित कर दी.बीजू को अगले दिन दिल्ली जाना था.

अगले दिन ८ अक्टूबर को प्रातः ८ बजे मैं और प्रणती **<u>गारूघूटू</u>** गये, यह तामुलपुर से १५ किलोमीटर है, जिसमें से ५ किलोमीटर तो वस्तुतः रास्ता है ही नहीं.यह गांव ५० घरों की बस्ती है ये सभी लोग संथाल जनजाति के हैं.यहां की आय का मुख्य स्रोत खेती और मजदूरी है, किन्तु गांव के सभी लोगों की जमीन साहूकारों के पास बन्धक है और अब ये लोग अपनी ही भूमि पर मजदूरी कर रहे हैं, पिछले ३ वर्ष पूर्व गांव की ३ एकड़ जमीन जो स्कूल के लिये रखी गयी है पर ही इन लोगों ने "शूम" के पौधे लगाये हैं जिस पर रेशम कीट पालन प्रारम्भ किया गया है, यह एक सामूहिक प्रयास है इसकी देखरेख बारी बारी से गांव वाले करते हैं.यहां एक क्लब घर है जिसमें एक विद्यालय पिछले ३० वर्ष से चलरहा है, गांव के ही एक व्यक्ति श्री लुकाती ने इसे प्रारम्भ किया था ३ वर्ष पूर्व उनकी मृत्यु हो गयी, पूरी अवधि उन्हें धान के रूप में बच्चों से

सहयोग मिलता रहा जो वार्षिक केवल २ कुन्तल तक था.इसके बाद एक युवा स्माइल मार्डी ने कमान सम्हाली है. ये कुल ५0 बच्चों को दिन में २ घंटे पढ़ाते हैं, गांव से वर्ष में एक बार सहयोग के रूप में २ कुन्तल तक धान मिल जाता है.अन्य कोई स्रोत न होने के कारण इन्हें मजदूरी भी करनी पड़ती है.यहां आशादर्शन के दो स्वयं सहायता समूह हैं (हिरामनी एव जयन्ती समूह), गांव वालों ने आशादर्शन के कार्यकर्ताओं से इस विद्यालय को आंशिक सहयोग देने का कई बार अनुरोध किया था, इस गांव से सरकारी स्कूल २ किलोमीटर पर है. शूम की खेती से वे बड़े ही आशान्वित हैं और इनका पहला लक्ष्य अपनी बन्धक जमीन को छुड़ाना है, इसके बाद ये विद्यालय को अपने से संसाधन से चलाने के प्रति संकल्पित हैं . यहां पर वर्मीकम्पोस्ट बनाने का काम भी हुआ है जिससे शूम के पौधों के लिये जैविक खाद प्राप्त हो जा रही है.हल्दी की खेती का भी प्रयास हो रहा है. ग्रामवासियों, स्वयं सहायता समूह की महिलाओं से ३ घंटे बातचीत हुई. इस गांव को जागरूक बनाने में बिरसा मुन्डा मेला क्लब की महत्वपूर्ण भूमिका है इसके सचिव महेश और अध्यक्ष स्टीफेन गांववालों को प्रेरित करते रहते हैं.मैने महसूस किया कि यहां शिक्षा के प्रति जागरूकता है, स्माइल की न्यूनतम आवश्यकता पूरी होनी चाहिये जिससे वे शिक्षण का काम और व्यवस्थित कर सकें. मैने आशा के बारे में बताया और आपस में चर्चा कर आगे का निर्णय लेने का गांव वालों को आश्वासन दिया.

इसके बाद हम वापस तामुलपुर आ गये, बीजू दिल्ली जाने के लिए गुवाहाटी रवाना हो गयीं. रविवार होने के कारण किसी केन्द्र पर जाना नहीं ठीक था. भोजन के बाद मैं, रंजना, गोविन्द, सबिता और प्रनती भूटान गये, तामुलपुर से बार्डर २६ किलोमीटर है, सघन जांच के बाद हम भूटान देश के पहले शहर सान्द्रुप जोन्खर पहुंचे,(इस शहर तक वीसा की आवश्यकता नहीं होती) यहां का बुद्ध मदिर दर्शनीय है. वापसी में हमने एक चाय बागान भी घूमा, प्राकृतिक छटा से रंजना एवं गोविन्द और स्निग्धा तो जैसे अभिभूत थे. हम मार्ग में पड़ने वाले सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र पर भी गये, यहां एक बड़ा हाल 'सीमा सुरक्षा बल' ने बना कर आशा दर्शन को दिया है, उन्होंने ८ सिलाई मशीनें भी दी हैं, जंगली एवं पहाड़ी जगह होने के कारण अभी अधिक महिलायें यहां प्रशिक्षण नहीं लेने आ पा रही हैं.साथ की जमीन पर शूम का नया प्लांटेशन कराया गया है. तामूलपुर आकर हमने आशादर्शन को पिछले वर्ष दान में मिली भूमि को देखने गये, अभी इस जगह का विकास नहीं हुआ है सम्पर्क मार्ग भी नही है, लेकिन एक दो वर्षों में विकास हो जाने की सम्भावना है, उल्लेखनीय है कि आशा दर्शन का इसी भूमि पर एक भवन बनाने का प्रस्ताव 'आशा' में WAH 2005 में था और इस निर्माण के लिये एकत्र हुये २ लाख पचहत्तर हजार रू आशा के वाराणसी खाते में रखे हैं शेष धन की प्रतीक्षा है इस बीच आशादर्शन को FCRA Clearance मिल जाने की सम्भावना है.

आज भी शाम आठ बजे से हमने बैठक प्रारम्भ की ये सोचा गया था कि २-३ घंटे में हम बजट पर चर्चा पूरी कर लेंगे किन्तु आज भी रात्रि के १ बजे तक चर्चा

चली.आज की बैठक में प्रनती, गोविन्द, वल्लभ, प्रनव, हिमानी, निर्मला, बुलू, सबिता, निवेदिता, रंजना शामिल रहे. हमने एक एक बिन्दु पर चर्चा करके इस वर्ष का शेष एवं अगले पूरे वर्ष का संयुक्त बजट फाइनल किया.नये शिक्षकों की आवश्यकता, अन्य नये व्यय पर भी चर्चा कर आम राय बनायी गयी.(संशोधित बजट संलग्न है),गोविन्द का एकाउन्ट का काम पूरा हो गया था. अतः तय हुआ कि अगले दिन गोविन्द एवं रंजना भी २ केन्द्रों पर जायेंगे.
अगले दिन, ९ अक्टूबर को ८ बजे मैं और अम्बिका छोटी बाइक से निकले. लगभग ९.३0 बजे हम पहाड़पुर गांव में पहुंचे .

पहाडपुर केन्द्रः

यह तामूलपुर से लगभग २५ किलोमीटर स्थित है जिसमें से ८ किलोमीटर अत्यंत दुरूह है किसी तरह बाइक जा सकी, रास्ते में ३-४ बार भूटान से निकली पहाड़ी नदी माटंगा को भी पार करना पड़ा, बारिश न होने के कारण पानी कम ही था.पहाड़पुर २५0 परिवारों का गांव है जहां मुख्यतः बंगाली, नेपाली, संथाल, बोडो़ समुदाय के लोग रहते हैं जिनकी आय का स्रोत मजदूरी है. यहां केन्द्र अप्रैल 0६ में प्रारम्भ कराया गया है इसके पहले यह ३ किलोमीटर पहले कावली में चल रहा था वहां सरकारी स्कूल प्रारम्भ होने के बाद स्थानीय समुदाय की मांग पर यहां स्थानांतरित किया गया है. विद्यालय का कमरा भी गांव ने ही बना कर दिया है. जब हम पहुंचे यहां एक शिक्षक रीता देवी मात्र ४ बच्चों को पढ़ा रही थीं, बच्चों तथा गांव के लोगों से बात करने से पता चला कि केन्द्र दुर्गापूजा एवं लखीपूजा के कारण पिछले १0 दिन से बन्द था आज ही खुला है बच्चे दूर दूर से आते हैं अतः आज जानकारी न होने के कारण नहीं आ सके हैं, सामान्यतः २0-२५ बच्चे आते हैं जबकि ३६ बच्चे नामांकित हैं.यहां मिड डे मील नहीं दिया गया है, इस गांव में आशादर्शन द्वारा प्रारम्भ किया गया स्वयं सहायता समूह भी है.शिक्षा समिति के सचिव श्री घनश्याम क्षेत्री एवं अध्यक्ष श्री छत्रबहादुर से भी बात हुई ये लोग विद्यालय से संतुष्ट हैं और आशान्वित हैं.रीता देवी ने शिक्षक प्रशिक्षण में भाग लिया है.यहां मुझे सबसे असंतोषजनक बात यह लगी कि आशादर्शन का कोई कार्यकर्ता अप्रैल 0६ से आज तक यहां नहीं आया है. शिक्षिका प्रतिमाह की तामूलपर में मूल्यांकन बैठक में जाती हैं जिससे सूचना मिलती है. अम्बिका ने बताया कि दुरूह होने के कारण यहां आना नहीं हो पा रहा है, अब बाइक होने से आना सम्भव रहेगा.यह विद्यालय अभी बालवाड़ी केन्द्र है और छोटे बच्चे आते हैं बड़े बच्चे कावली पढ़ने जाते हैं.
यहां से हम लगभग ६ किलोमीटर चल कर नागापुर आ गये.

नागापुर केन्द्रः

११.३0 बजे थे, केन्द्र पर कोई शिक्षक या बच्चे नहीं थे, यह बोड़ो बहुल क्षेत्र है. यह केन्द्र पिछले ४-५ वर्ष से संचालित हो रहा है, टैग्स द्वारा एक बड़े कमरे का निर्माण हथकरघा चलाने के लिये कराया गया था यहां ६ करघे (Loom) हैं, किन्तु देखने से लगा कि कई वर्ष से इन पर काम नहीं हो रहा है. यह निर्माण गांव के एक छोर पर है और पास मे ही एक सरकारी विद्यालय है जिसमें लगभग

१00 बच्चे हैं आज वह स्कूल भी बन्द था पास में ही रहने वाली पिनिशा एवं रेखा ने बताया कि दोनो विद्यालय दुर्गापूजा से ही बन्द हैं उन्होंने बताया कि सामान्य दिनों में १५ से २0 बच्चे आते हैं,यहां दो शिक्षिका हैं और सरकारी स्कूल में ३ शिक्षक हैं सरकारी स्कूल के बच्चों को चावल दिया गया था इधर २ माह से बन्द है. यह गांव २ किलोमीटर लम्बा है और दोनो स्कूल एक छोर पर है अतः दूसरी तरफ से छोटे बच्चे यहां नहीं आ पाते हैं, दोनो शिक्षिकायें गांव की हैं हमने उनसे मिलने का निर्णय लिया. शिक्षिका लखी एवं उर्मिला तथा अन्य गांव वालों से मिलकर बात करने पर निम्न जानकारी मिलीः

- वर्तमान स्थान पर विद्यालय की कोई आवश्तकता नहीं है क्योंकि वहां पर पास में ही सरकारी स्कूल एवं बालवाड़ी है.
- गांव के दूसरे छोर पर स्थान गांव वाले उपलब्ध करा देंगे.
- नये स्थान पर विद्यालय चलने से कम से कम ४0-५0 छोटे बच्चे पढ़ सकेंगे जो बाद में सरकारी स्कूल में जाने लगेंगे.
- वर्तमान में आशा दर्शन के केन्द्र में आने वाले लगभग सभी बच्चों का पंजीकरण सरकारी स्कूल में भी है.

इस विषय पर शिक्षा समिति, शिक्षक, गांव वासियों एवं आशा दर्शन के कार्यकर्ताओं की बैठक में अन्तिम निर्णय होगा. मैं शिक्षा समिति की अध्यक्ष श्रीमती जानकी के घर भी गया किन्तु मुलाकात नहीं हो सकी.यहां पर आशा दर्शन की कार्यकत्री अम्बिका, प्रनती और हिमानी प्रायः आती हैं विद्यालय के स्थान परिवर्तन का विचार पहले क्यों नहीं आया मुझे समझ में नहीं आया.यहां से निकल कर हम सिंगारामारी केन्द्र पर पहुंचे जो नागापुर से ५ किलोमीटर की दूरी पर है.

<u>सिंगारामारी केन्द्रः</u>

यह केन्द्र गांव के सहयोग से बने २ कमरों मे चलता है जिसमे दरवाजे नहीं हैं, जब हम पहुंचे कुल ४९ बच्चे जिसमे २१ लड़कियां थीं पढ़ाई कर रहे थे. दो शिक्षक थे.इस गांव मे बोड़ो और संथाल समुदाय के लोग रहते हैं. बच्चों का स्तर अच्छा है, शिक्षकों के पढाने का तरीका भी रोचक है, बच्चों से मैने काफी बातें की. उन्होने मिड डे मील के बारे में भी बताया और कहा कि अच्छा लगता था किन्तु जून से बन्द है, कब शुरू होगा ? बच्चो ने बताया कि पास की भूटान की पहाडियों और जंगल से जंगली हाथी एवं भालू गांव में आकर फसल बर्बाद करते रहते हैं. इन्होने कई गीत सुनायें एवं अभिनय दिखाये. इसी समय एक Three Wheeler से गोविन्द, रंजना, स्निग्धा एवं प्रणती भी वहां आ गये, ये लोग दो केन्द्र लखीनारायणपुर तथा हाजोंगबस्ती होकर आ रहे थे.एक साथ कई लोगों के आने से बच्चे उत्साहित थे. इस केन्द्र पर दरवाजा नहीं होने के कारण वाटर फिल्टर शिक्षिका के घर पर रखा है खेलने का सामान भी वहीं रहता है और वे साथ में लेकर आती हैं. बच्चों के पास लकड़ी के कई खिलौने तथा पिक्चर कार्ड थे. शिक्षकों ने बताया कि गांव के सहयोग से इस बार धान की फसल के बाद दरवाजा लगाया जायेगा. १.३0 बजे छोटे बच्चों को अवकाश दे दिया गया, आज

के पहले दोनो केन्द्रों पर की स्थिति से मैं बेहद निराश था किन्तु यहां आकर तसल्ली हुयी.

यहां से हम सभी कुमारीकाटा स्थित टैग्स के कार्यक्षेत्र पर गये. हमने यहां संचालित हो रहे विभिन्न प्रकार के चरखों पर उत्पादन एवं प्रशिक्षण का कार्य, रेशम कीट पालन ,वर्मीकम्पोस्ट, गौशाला, तेल घानी, कारपेन्टरी इत्यादि कार्यों को देखा.इस क्षेत्र की परिस्थितियों और संस्कृति को ध्यान में रख कर अत्यंत ही व्यवस्थित तरीके से प्रयास किया जा रहा है जो प्रशंसनीय है.
गोविन्द और रंजना आज जिन दो केन्द्रों पर गये उनकी जानकारी निम्न हैः

<u>लखीनारायनपुर केन्द्रः</u>

तामूलपुर से १८ किलोमीटर पर स्थित यह १000 जनसंख्या का गांव है, जिसमें मुख्यतः बंगाली एवं नेपाली समुदाय है.यहां के लोगों की आय का मुख्य स्रोत मजदूरी तथा खेती है.केन्द्र गांव वासियों द्वारा बनाये गये स्कूल में चलता है, यहां कुल ११२ बच्चे है आज ६५ बच्चे आये थे. मिड डे मील जून तक दिया गया था .मिड डे मील की सामग्री रखने के लिये स्थान एवं दूध बनाने के लिये लिये गर्म पानी की व्यवस्था गांव के लोग करते हैं.आज दोनो शिक्षक आये थे.गांववालों के सहयोग से और एक कमरे का निर्माण कराया जायेगा.यहां पर पास में ही एक वेन्चर स्कूल है जिसमें कक्षा ५, ६ एवं ७ कक्षायें चलती थी किन्तु लम्बे समय से किसी प्रकार का सहयोग नहीं मिलने के कारण अब लगभग बन्द हैं, गांव के लोग चाहते थे कि दोनो स्कूल साथ चलें, पिछले दिनों आशा दर्शन के कार्यकर्ताओं, केन्द्र के शिक्षकों एवं गांववालों की बैठक में निर्णय लिया गया कि अगले सत्र से यहां आगे की भी कक्षायें चलेंगी. यहां से सरकारी स्कूल ४ किलोमीटर पर है.इस केन्द्र के बच्चों का ज्ञान का स्तर बहुत अच्छा है.बच्चों ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम दिखाये.विद्यालय में कुछ खिलौने भी थे.

<u>हाजोंगबस्ती केन्द्रः</u>

वैसे तो इस गांव की सीधी दूरी लखीनारायणपुर से ३ किलोमीटर ही है किन्तु रास्ते में काला नदी के कारण घूमकर जाना होता है जिससे दूरी ८ किलोमीटर हो जाती है.यहां के लोग मुख्यतः मजदूरी एवं खेती करते है, यहां हाजोंग जनजाति एवं बंगाली समुदाय के लोग हैं, आशा दर्शन का बालवाड़ी केन्द्र ४ वर्ष से चल रहा है, यहां कुल ५५ बच्चे नामांकित हैं, आज १९ लड़कियां और १३ लड़के, कुल ३२ बच्चे उपस्थित थे. शिक्षिका केवल चम्पावती ही थीं एक अन्य शिक्षिका आज बीमार होने के कारण अनुपस्थित थीं. यहां मिड डे मील नहीं दिया गया था, क्योंकि यहां एक सरकारी बालवाड़ी है जिसमें कुछ दिन तक आहार दिया गया था किन्तु अब बन्द है, वर्तमान में एक भी बच्चा उस केन्द्र पर नहीं जाता है क्योंकि शिक्षिका आतीं ही नहीं. आशादर्शन का यह केन्द्र गांव के लोगों के सहयोग से बने कमरे में चलता है.यहां के बच्चे काफी छोटे हैं, बड़े बच्चे २ किलोमीटर दूर एक वेन्चर स्कूल में पढ़ने जाते हैं.यहां टूटे हुये कुछ खिलौने

भी दिखे, शिक्षा का स्तर सामान्य था. छोटे बच्चों के साथ खेलने में व्यस्त स्निग्धा वापस आने को तैयार ही नहीं थी.

वापस तामूलपुर लौटकर हमने सभी कार्यकर्ताओं से बातचीत की और अपनी दिन भर आकलन को बताया, पहाड़पुर और नागापुर केन्द्र को लेकर लम्बी बातचीत हुई, यह तय हुआ कि इन दोनों स्थानों पर विशेष ध्यान देकर स्थितियां सुधार में लायी जायेंगी. टीम ने बताया कि बोड़ो बहुल क्षेत्र में काम करना कठिन है और ये लोग सामान्यतया 'आब्सू' (All Bodo Students Union) की ही बात मानते हैं, आब्सू के उद्देश्य में शिक्षा का प्रसार भी है और वे आशादर्शन के प्रयास से संतुष्ट हैं तथा सहयोग को तैयार हैं, अतः आब्सू के साथ बैठक करके उनसे अपने ऐसे केन्द्र जो बोड़ो बहुल क्षेत्र में चलते हैं में सहयोग लिया जायेगा. अभी ३ केन्द्र बच गये थे ये सभी बोड़ो बहुल क्षेत्र में थे अतः तय हुआ कि हम चार लोग चलें यहां भाषा की समस्या आने वाली थी अतः हमने टीम की बोड़ो भाषी सदस्या हिमानी बोड़ो को भी साथ लेकर चलने का तय किया.
अगले दिन १0 अक्टूबर को टीम की एक सदस्या मीना के यहां से एक मोटर साइकिल ली गयी, इस प्रकार दो वाहनों से हम ४ लोग प्रनती, प्रनव, हिमानी और मैं तामूलपुर से २९ किलोमीटर खुमगुरी केन्द्र पर पहुंचे.

<u>खुमगुरी केन्द्र</u>ः
यह केन्द्र टैग्स द्वारा बनाये गये बुनाई केन्द्र में चलता है. यहां बुनाई का काम कई साल से बन्द है. यह गांव के बाहर बना हुआ है. कई दिन के अवकाश के बाद आज विद्यालय खुला था और कुल १८ बच्चे जिसमे ७ लड़कियां थी आये थे. जबकि यहां कुल ५0 बच्चे नामांकित हैं, शिक्षिका सुश्री बसन्ती ने बताया कि गांव के बाहर होने के कारण, और लम्बी बन्दी के कारण बच्चों को घर से लाना पड़ता है. दूसरी शिक्षिका अन्जुली मातृत्व अवकाश पर हैं. यहां के बच्चे मुश्किल से नाम तक लिख पा रहे हैं, यहां की मातृ भाषा बोड़ो और लिपि देवनागरी है, शिक्षक प्रशिक्षण भी आसामी भाषा में ही हुआ है, अतः स्वाभाविक है कि शिक्षा का स्तर अच्छा नहीं है इसी गांव मे एक वेन्चर स्कूल गांव के ही प्रयास से चल रहा है यह गांव के मध्य में है और बच्चों के लिये सुविधाजनक स्थान पर है, यहां एक शिक्षक हैं और ५0 बच्चे हैं, यहां कक्षा १ से कक्षा चलती है. गांव के लोगों से बात करने पर उनका कहना था कि दोनो स्कूल एक साथ चले तो अच्छा रहेगा. अपने केन्द्र पर जून माह तक मिड डे मील दिया गया था, जिसके अब बन्द होने से गांव वाले दुखी थे. यहां बच्चे खिलौने से खेल रहे थे और चित्र बना रहे थे. गांव के अधिकांश लोग नदी में पत्थर तोड़ने का काम करते हैं. इस गांव में पानी की समस्या है, अधिक आयरन होने के कारण पानी पीने योग्य नहीं है, १ किलोमीटर से लाना पड़ता है वहां सेना ने पानी टंकी लगा रखी है. मलेरिया, पीलिया का प्रभाव भी यहां ज्यादा रहता है. गांव वालों और बच्चों से वार्ता के दौरान हिमानी ने भाषा समझने में काफी सहायता की. यहां से ४ किलोमीटर आगे चल कर अम्लाईगुरी केन्द्र पर पहुंचे. रास्ते में पड़ने वाली माटंगा नदी को पार करने में हमें अत्यंत असुविधा हुई.

अम्लाईगुरी केन्द्रः
यह केन्द्र भी टैग्स द्वारा बनाये गये बुनाई केन्द्र में चलता है.यहां बुनाई का काम कई साल से बन्द है तथा करघे गांव वाले अपने घर लेते गये हैं. यहां कुल ३५ बच्चे नामांकित हैं किन्तु आज २२ बच्चे आये थे, ११ लड़के और ११ लड़कियां.यहां केन्द्र ४ वर्ष से चल रहा है, पहले गांव का सहयोग भी था किन्तु पास में ही एक सरकारी स्कूल और बालवाड़ी के खुलने के बाद से गांव के लोगों ने आशा दर्शन के केन्द्र का सहयोग करना बन्द कर दिया है, पिछले वर्ष से सरकारी स्कूल में पढ़ाई भी अच्छी हो रही है, अपने केन्द्र पर आने वाले सभी बच्चों का नाम प्रायः सरकारी स्कूल में भी लिखा है, इस केन्द्र पर बच्चों ने बातचीत में बताया कि यहां हम इस लिये आते हैं कि हमे खिलौने मिलते हैं इस केन्द्र पर काफी खिलौने हैं . शिक्षिका हिरनी ने बताया कि यहां मिड डे मील नहीं दिया गया, उन्होंने बताया कि शिक्षा समिति के सचिव गोबिन्द काकलोरी और अध्यक्ष फूलन मुसाहारी कभी मीटिंग में नहीं आते. अभिभावक भी विद्यालय में नहीं आते हैं, सरकारी स्कूल के किसी कारण से बन्द होने पर इस केन्द्र पर भी बच्चे नहीं आते हैं आज सरकारी स्कूल खुला था और ५0 से अधिक बच्चे वहां थे. गांव के अधिक लोगों से बात नहीं हो सकी किन्तु हमने महसूस किया कि इस केन्द्र को अगले सत्र से बन्द कर देना चाहिये अथवा किसी अन्य स्थान पर स्थानांतरित कर देना चाहिये, हिरनी काफी योग्य शिक्षिका लगीं.उन्होने बताया कि पास के दानसंग गांव में भी शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है.वहां इस केन्द्र को स्थानांतरित कर सकते हैं. मैने सुझाव दिया कि इस केन्द्र को स्थानांतिरित करने का निर्णय गांव की बैठक में किया जाना चाहिये और सभी बच्चों का नामांकरण सरकारी बालवाडी में किया जाना चाहिये तथा खिलौने का बाक्स सरकारी स्कूल को दे दिया जाय, जिससे बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बनी रहे. अगला केन्द्र अन्ठाईबारी, यहां से १.५ किलोमीटर पर था किन्तु रास्ता दुरूह था अतः हमने पैदल जाने का निर्णय लिया.

अन्ठाईबारीकेन्द्रः
इस केन्द्र के बारे में प्रणती ने बताया था कि यह केन्द्र जुलाई से अनियमित है, और इधर लगभग एक माह से बन्द चल रहा है.यह केन्द्र पहले टैग्स के बनाये बुनाई केन्द्र में चल रहा था.किन्तु गांव के बाहर होने के कारण बच्चे वहां नहीं आना चाहते थे, अतः यहां की शिक्षिका बीना ने स्थान शिफ्ट कर गांव के मध्य में कर दिया. जून माह तक मिड डे मील दिया गया था, जनवरी 0६ मे बीना का विवाह होने के बाद वे ससुराल से यहां आकर पढ़ाने का काम करती थी जों १0 किलोमीटर है अतः वह अनियमित थीं गांव इस वाले अनियमितता से दुखी थे उन्होंने ४ अक्टूबर को एक मीटिंग बुला कर बीना से कहा.इसी दिन बीना ने त्यागपत्र दे दिया. तभी से स्कूल बन्द है. इस गांव में एक वेन्चर स्कूल गांव वाले चला रहे हैं वे चाहते हैं कि आशा दर्शन का स्कूल भी साथ में चले. हमारी बातें गांव के लोगों और बीना से हुई. यह तय हुआ कि एक बैठक गांव के लोगों, वेन्चर स्कूल, आब्सू के प्रतिनिधियों और आशादर्शन के सदस्यों के

साथ की जायेगी जिसमें आगे की योजना पर विचार कर तय करना होगा.यह बैठक इसी माह होगी, गांव के लोग मिड डे मील योजना को उपयोगी बता रहे थे.बोड़ो क्षेत्रों में मैंने महसूस किया कि यदि सहयोग बन्द करने की बात हम करते हैं तो वे लोग उग्र हो सकते हैं, अतः कोई निर्णय संयुक्त बैठक में ही लिया जाना चाहिये.

वापस हम अपने वाहन अम्लाईगुरी से लेकर वापस आ गये.यहां एक बात और उल्लेखनीय है कि आशादर्शन की टीम का कोई भी सदस्य फरवरी ०६ से अभी तक अन्ठाईबारी एवं अम्लाईगुरी केन्द्र पर नहीं आया है.निरीक्षण बिल्कुल नहीं हो सका है केवल मासिक बैठकों में शिक्षकों द्वारा दिये गये प्रस्तुतीकरण पर ही भरोसा किया जाता है.इसका कारण प्रनती ने बताया कि ये दोनो केन्द्र दुरूह हैं और माटंगा नदी के कारण बारिश में जाना और कठिन है.वापस आकर हमने पुनः एक संक्षिप्त बैठक की जिसमें निष्कर्ष निकला कि खुमगुरी मे स्थान परिवर्तन, अम्लाईगुरी के केन्द्र का स्थानान्तरण दानसंग में करना और अण्ठाईबारी केन्द्र को वेन्चर स्कूल के साथ मिला देने का प्रयोग हमें गांव के साथ बैठक करके करना चाहिये, क्योंकि यह स्थानीय समुदाय की मांग है. आब्सू की भी सहायता लेनी चाहिये, समस्या ग्रस्त केन्द्रों पर आशादर्शन के टीम को प्रति सप्ताह जाना चाहिये, गांव से लगातार सम्पर्क आवश्यक है, केन्द्रों के नियमित निरीक्षण के बारे मे मैंने सुझाव दिया कि जब शिक्षक प्रतिमाह तामुलपुर तक आ सकते हैं तो आप लोग भी जा सकते हैं, इससे स्थिति स्पष्ट रहेगी, इस बात से सबकी सहमति थी.

शाम ५ बजे हम तामूलपुर से आशादर्शन के साथियों से विदा लेकर गुवाहाटी आ गये, अगले दिन हमें एक आशा की एक और प्रोजेक्ट ए.सी.आर.डी. देखने जाना था, हमारे साथ प्रनव और प्रनती भी आये. हमने तय किया कि प्रनती, रंजना और स्निग्धा गुवाहाटी में रूक कर कुछ अन्य दर्शनीय स्थल देख सकेंगे और गोविन्द तथा मैं ए.सी.आर.डी.जायेंगे, प्रनव हमारी भाषा की समस्या को हल करने में हमारी सहायता के लिये साथ चलेंगे.

अन्य जानकारियांः

<u>हमारा आसामी भाषा का ज्ञानः</u> हमने बच्चों से प्रश्न पूछने के लिये कुछ प्रश्न आसामी भाषा में याद कर लिये थे जिससे वार्ता करना आसान हो रहा था, इनमे से कुछ प्रश्न निम्न हैंः

१. *एइखान स्कूलाले किमान लोरा स्वाली आहे* इस स्कूल में कितने बच्चे हैं
२. *तुमी केतियार पोरा आही आसा* तुम कब से आ रहे हो
३. *सर सदाय आहे ने, ने केतिया बा केतिया आहे ने की* सर रोज आते हैं कि कभी कभी
४. *स्कूलाले दुपरियार खादाय दिये ने* स्कूल में दिन का खाना मिलता है
५. *सदाय दिये ने की* हमेशा मिलता है
६. *तोमा लोके स्कूलार फीस दिबो लागे ने* तुम लोग स्कूल की फीस देते हो

७. *कुन जन टीचर तोमार लोकार बेसी भाल लागे* कौन शिक्षक तुन्हे सबसे अच्छे लगते हैं

स्वयं सहायता समूह ः

आशा दर्शन २ जिलों बक्सा एवं धेमाजी मे कुल ८० गांव में काम कर रही है, जो ३ ब्लॉक में है. तामूलपुर ब्लॉक में ३५ गांव, नागरीजुली ब्लॉक में २५ गांव तथा बोरदोलाई ब्लॉक में २० गांव में मिलाकर इन्होंने कुल ३६५ स्वयं सहायता समूह बनाये हैं जिनमें से लगभग ३०० सक्रिय हैं, स्वयं सहायता समूहों की सक्रियता से साहूकारी प्रथा पर असर पड़ा है, अपनी छोटी आवश्यकताओं के लिये अब समूह के सदस्यों को मंहगे दर पर कर्ज नहीं लेना पड़ता है न ही जमीन या अचल सम्पत्ति बन्धक रखनी होती, उत्पादन की कुछ गतिविधियां हो रही हैं, जैसे चूड़ा, गुड़, शहद, सब्जी, कपड़ा, अगरबत्ती, साबुन का उत्पादन एवं पशुपालन जिससे आय प्रारम्भ हो गयी है, आशादर्शन ने तामूलपुर में एक दुकान किराये पर लेकर स्वयं सहायता समूह के उत्पादन की बिक्री का केन्द्र भी खोला है. मिड डे मील कार्यक्रम में भी आशादर्शन ने इन स्वयं सहायता समूहों से ही चूड़ा और गुड़ की खरीद की है.इसके अतिरिक्त प्रदर्शनी में हिस्सा लेकर भी बिक्री करने का प्रयास किया गया है.

मिड डे मील कार्यक्रमः

यह नवम्बर में प्रारम्भ किया गया, जिन स्थानों पर सरकारी स्कूल या बालवाड़ी थे जैसे अम्लाईगुरी, नागापुर, हाजोंगबस्ती में यह कार्यक्रम नहीं चलाया गया क्योंकि उस समय सरकारी स्कूलों में भी पका खाना देने की व्यवस्था थी किन्तु जनवरी ०६ से बन्द हो गयी. शांतिपुर केन्द्र अप्रैल में प्ररम्भ किया गया वहां एक भी दिन मिड डे मील नहीं दिया गया.पहाड़पुर केन्द्र पहले कावली में था वहां मिड डे मील मार्च ०६ तक दिया गया लेकिन अप्रैल में पहाडपुर में शिफ्ट होने पर वहां नहीं दिया गया. शेष सभी केन्द्रों पर नवम्बर से जून तक मिड डे मील दिया गया है, इसका अच्छा परिणाम दिखता है, क्षेत्र की विषमता के कारण बच्चों को समुचित पोषण मिल पाना सम्भव नहीं लगता है, ऐसे में मिड डे मील दिया जाना एक अच्छा प्रयास है,किन्तु इसे नियमित होना चाहिये.पिछले बजट में आशा दर्शन ने मिड डे मील का धन शिक्षकों के मानदेय में व्यय कर दिया है, जो ठीक नहीं है. इस योजना में प्रति बच्चे पर प्रतिदिन ५ रू. का व्यय हो रहा है, प्रतिदिन एक ही तरह का भोजन दिया जा रहा है, किन्तु दुरूह परिस्थितियों के कारण यही सम्भव है.पका भोजन देने के लिये अलग से कार्य कर्ता चाहिये जो सम्भव अभी नहीं लगता इसके अतिरिक्त सब्जी, ईंधन इत्यादि की प्रतिदिन खरीद सम्भव नहीं लगती खाने में प्रति बच्चे को १०० ग्राम चूड़ा, ५० से १०० ग्राम गुड़ तथा १०० मिलीलीटर दूध दिया गया है.बच्चे अपना बर्तन लेकर आते हैं .पाउडर दूध को बनाने के लिये गर्म पानी की व्यवस्था पास के ही किसी घर में हो जाती है.गांव के लोगों, शिक्षकों एवं बच्चों ने बात करने पर लगभग प्रत्येक केन्द्र पर यही बताया कि मिड डे मील देने पर बच्चों की संख्या बढ़ जाती है.इस कार्यक्रम के लिये सामग्री कुमारीकाटा में रखी जाती थी एवं

सभी केन्द्रों के शिक्षक प्रति रविवार को आकर अगले सप्ताह की सामग्री अपने केन्द्र के लिये ले जाते थे. स्वयं सहायता समूह द्वारा चूड़ा एवं गुड़ कुमारीकाटा पहुंचा दिया जाता था, दूध पाउडर गुवाहाटी से आता था, सभी सामग्री को रखने के लिये कुमारीकाटा में स्थान की कमी मुझे स्पष्ट दिखी. पिछले ४ माह से मिड डे मील न मिलने की शिकायत मुझे सभी केन्द्रों पर मिली.

स्वास्थ्य समस्याः

वैसे तो पूरे पूर्वोत्तर में मलेरिया, पीलिया इत्यादि की समस्या है, लेकिन इस क्षेत्र में कुपोषण के कारण यह समस्या अधिक ही है, नियमित स्वास्थ्य की जांच, वैक्सिनेशन इत्यादि आवश्यक है. पिछले दो वर्षों में आशादर्शन के केन्द्रों के लगभग १0 बच्चों की मौत मलेरिया से हो चुकी है. आशादर्शन द्वारा स्वास्थ्य के लिये कार्यक्रम चलाया जा रहा है. किन्तु और सघन कार्य करने की आवश्यता है.

सरकारी विभागः

शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल सम्पर्कमार्ग जैसी मूल भूत सुविधायें उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी सरकार की होनी चाहिये, लेकिन मैने पाया कि सरकारी विभाग इन सुविधाओं के प्रति बिल्कुल उदासीन हैं, अधिकांश गावों में पीने योग्य पानी नहीं है. और आशादर्शन, सेविका निकेतन और टैग्स जैसे जन संगठन भी समुचित दबाव नहीं बना पा रहे हैं, सूचना का अधिकार, रोजगार गारण्टी, सर्वशिक्षा अभियान के प्रति भी कोई विशेष जागरूकता नहीं है. मैं पहली बार इस क्षेत्र में १९९८ में गया था, तब से यह मेरी सातवीं यात्रा थी, मैंने महसूस किया कि सरकारी परिस्थितियां बिल्कुल नहीं बदली हैं. भूटान की सीमा से लगे लगभग २५ गांव को राजस्व गांव का दर्जा प्राप्त नहीं है, यह वन विभाग की सम्पत्ति है इसी क्षेत्रमें आशादर्शन के अधिकांश शिक्षा केन्द्र हैं अतः इन गांवों में मूलभूत सुविधायें नहीं मिल पा रही हैं.

वेन्चर स्कूल (VentureSchool) :

असम का "वेन्चर स्कूल" एक उल्लेखनीय प्रयास है. मुझे पता नहीं है कि इस तरह का कोई प्रयास अन्य किसी राज्य में है या नहीं. ये वेन्चर स्कूल २0 से २५ वर्ष पूर्व अधिकांश गांवों में गांव वालें के सहयोग से किसी सार्वजनिक स्थान पर बनाये गये थे, उन स्कूलों के पास काफी खुली जगह भी है. गांव के अथवा आस पास के किसी पढ़े लिखे व्यक्ति की नियुक्ति की गयी थी वही बच्चों को पढ़ाने का काम करता था, इस व्यक्ति को गांव वाले धान या कुछ पैसे दिया करते थे, उम्मीद थी कि कभी ये स्कूल सरकारी हो जायेगा, सरकार ने १५ वर्ष पूर्व एक सर्वे भी कराया किन्तु केवल ऐसे स्कूल ही सरकारी हो सके, जिनके गांव के लोग पहुंच वाले थे या किसी राजनैतिक दल से जुड़े थे. शेष लगभग १५000 वेन्चर स्कूल वैसे ही रह गये, समय बीतने पर असम की परिस्थिति बदली, और ये स्कूल बदहाल स्थिति में हो गये, कुछ स्थानों पर शिक्षक अभी भी बिना किसी सहयोग के पढ़ाये जा रहे हैं, गांव के लोग यथा सम्भव सहयोग करते हैं किन्तु अधिकांश शिक्षक कठिनाई से ही जीवनयापन कर पा रहे हैं, गांव के लोग इन शिक्षकों का बहुत सम्मान करते हैं. मुझे लगा कि इन स्कूलों

से गांव वालों का भावनात्मक रिश्ता है. यदि इन्हें को सरकारी या किसी अन्य स्रोत से सहायता मिल जाय तो बिना किसी इन्फ्रास्ट्रक्चर का व्यय किये शिक्षा का अच्छा विकास सम्भव है,

आशा दर्शन की टीमः

आशा दर्शन की टीम को श्री रबिन्द्रभाई, टैग्स, सेबिका निकेतन आदि संस्थाओं से काफी नैतिक सहयोग मिलता है.इस टीम में निम्न सदस्य हैं, प्रायः सभी लोग अपने सभी कार्य करते हैं और अपनी मासिक बैठकों में अपनी भूमिका तय करते हैं किन्तु प्रमुख जिम्मेदारी निम्न वत है.

क्रमांक	नाम	कब से हैं	प्रमुख भूमिका	सहयोग कहां से मिल रहा है
१	बीजू बोरबरूआ	१९९९	समन्वयक	आशा
२	सबिता राय	१९९९	शिक्षा, लेखा	आशा
३	अम्बिका हाजोंग	२००१	शिक्षा, मिड डे मील	आशा
४	हिमानी बोड़ो	२००३	शिक्षा, संगठन	आशा
५	प्रणती थर	२००१	शिक्षा समन्वयक	आशा
६	मीना राभा	अप्रैल २००५	कार्यालय, मिड डे मील	आशा
७	प्रनब सइकिया	जुलाई २००६	लेखा, रिपोर्टिंग	तय नहीं है
८	बुलू राजबोंगशी	अपैल २००५	संगठन	एड
९	निवेदिता चक्रबर्ती	अपैल २००५	संगठन	एड
१0	शेफाली राय	२००२	संगठन	एड
११	निर्मला राभा	अप्रैल २००५	प्रशिक्षण	एड
१२	दीपाली महतो	२००४	संगठन धेमाजी जनपद	एड
१३	मृदुला हाजोंग	अपैल २००५	संगठन धेमाजी जनपद	एड
१४	चिंकावरी बसुमती	२००४	दुकान	एड

सभी शिक्षकों की बैठक प्रतिमाह तामूलपुर कार्यालय पर २१ तारीख को होती है.

हमारे सुझावः

१.शिक्षा स्तर में सुधार के लिये शिक्षक प्रशिक्षण नियमित होना चाहिये.बोड़ो भाषी केन्द्र के शिक्षकों का अलग से प्रशिक्षण कराना चाहिये.

२.नागापुर, पहाडपुर, अम्ठाईबारी, खुमगुरी, अम्लाईगुरी दानसंग में आशा दर्शन को गम्भीरता से समय देना चाहिये तथा वहां गांव के लोगों के साथ नियमित वार्ता करके उनको शिक्षा केन्द्र के प्रति जागरूक बनाना चाहिये.

३.मिड डे मील योजना सभी केन्द्रों पर चलनी चाहिये, और इसमें नियमितता होनी चाहिये. अभी पका भोजन देने का विचार क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुसार अच्छा नहीं होगा.

४.जिन गांवों में केन्द्र हैं, उस गांव के स्वयं सहायता समूहों को विद्यालय में सक्रिय भूमिका निभाने के लिये प्रेरित करना चाहिये.

५.जिन नये स्थानों पर केन्द्र प्रारम्भ होने जा रहा है, वहां के शिक्षकों का भी प्रशिक्षण होना चाहिये.
६.केन्द्रों पर खेल की सामग्री का पूरा उपयोग होना चाहिये.
७.सरकार के अधिकारियों पर दबाव बनाने के लिये उन्हें समस्याओं का उल्लेख करते हुये पोस्टकार्ड भेजने के लिये गांव के लोगों को प्रेरित करना चाहिये.
८.अम्लाईगुरी केन्द्र के दानसंग में स्थानांतरित होते समय खेल सामग्री एवं ब्लैक बोर्ड सरकारी विद्यालय में दे दिया जाना चाहिये.
९.स्थानीय परिस्थितियों में होने वाले स्वावलंबन के और तरीके खोज कर प्रारम्भ करने के लिये प्रेरित करना चाहिये.जिससे आर्थिक विकास हो सके. घारूघूटू का शूम प्लांटेशन एक अच्छा उदाहरण है.
१0.स्कूल के लिये स्थानीय सहयोग जिस प्रकार सत्यनारायणपुर तथा सिंगरामारी में धान के रूप में मिल रहा है उसी तरह अन्य केन्द्रों पर भी मिले इसके लिये प्रयास करना चाहिये, वैसे अनेक केन्द्रों पर ऐसा होना अभी सम्भव नहीं लगता क्यों कि परिस्थितियां अत्यंत ही विषम हैं.
११.सत्यनारायणपुर के बच्चों की सांस्कृतिक टीम बनाई जा सकती है, जिससे वे जागरूकता के नुक्कड़ नाटक, गीत इत्यादि की तैयारी करके उसके माध्यम से जागरूकता पैदा कर सकें.
१२. आशा वाराणसी से प्राप्त दो सेट लाइब्रेरी की पुस्तकों की सहायता से शिक्षक छोटी कहानियां एवं गीत तैयार कर सकते हैं. असमी भाषा में भी बच्चों की पुस्तकों की लिस्ट तैयार करके आशा वाराणसी को उपलब्ध करायी जानी चाहिये, जिससे भविष्य में प्रत्येक केन्द्र पर एक लाइब्रेरी स्थापित की जा सके.
१३.आशादर्शन को अपनी त्रैमासिक रिपोर्ट भेजनी चाहिये, जिसमे खर्च का भी विवरण हो जिससे स्थिति स्पष्ट रहे. आशा सिलिकान वैली के साथियों को भी निश्चित अन्तराल पर आशादर्शन की टीम से बातचीत करनी चाहिये.
१४.बच्चों का नियमित स्वास्थ्य परीक्षण एवं वैक्सिनेशन किया जाना चाहिये.

प्रस्तुतीकरणः
वल्लभ
(गोविन्द एवं रंजना की सहायता से)
आशा वाराणसी
23th Oct, 2006
Contact Nos: 9415256848(Vallabh)
9936864474(Govind Sharma)
ashakashi@gmail.com
ashakashi@yahoo.com
govind_asha@yahoo.com

Status of Students in Different Centers of Asha Darshan

S.No	Name of Center	No of Teacher	Class	Boys	Girls	Total	Today's Attendance (During Our visit)	Expected Students in Next Session	Requirement of Teachers in Next Session
1	Khumguri	2	Balwadi	24	26	50	19	65	2
2	Lakhinarayanpur	2	Up to Class 4	59	52	111	45	125	4
3	Amlaiguri	1	Balwadi	19	16	35	22	Nil	Nil
4	Anthaibari	1	Balwadi	28	15	43	Nil	80	2
5	Nagapur	2	Balwadi	27	30	57	Nil	50	2
6	Paharpur	1	Balwadi	19	17	36	4	40	1
7	Sigramari	2	Up to Class 4	31	30	61	46	70	2
8	Satyanarayanpur	5	Up to Class 5	129	113	242	152	265	7
9	Hajongbasti	2	Balwadi	31	24	55	33	60	2
10	Namati	3	Up to Class 4	58	58	116	43	125	3
11	Shantipur 2nd	2	Up to Class 4	90	55	145	82	155	3
12	Shantipur 1st	Nil	Balwadi					40	1
13	Dansrang	Nil	Balwadi					50	2
14	Garughutu	Nil	Balwadi					40	1
	Total	23				951		1165	32

Revised Budget Details for Asha Darshan for 2006-07

(Period: April-06 to Dec-07)

Project Title: Child Education And Development. Northeast India

I. Honorarium:

A. For Staff:

Sl No.	Particular	Detail	Amount	
1	Project coordinator	April-06 to Dec-07	1X7000X21=1,47,000	00
2	Education coordinator	May-06 to Dec-07	1X3000X20=60,000	00
3	Organisers-4	Do	4X3000X20=2,40,000	00
Total			**4,47,000**	**00**

B. For Teacher:

Sl No.	Particular	Detail	Amount	
4	Primary Teachers-6	May-06 to Dec-07	6X2300X20 = 2,76,000	00
5	Assistant Teachers-7	Do	7X1800X20=2,52,000	00
6	Pre-School (Balwadi) Teachers-10	Do	10X1500X20=3,00,000	00
7	ME School-1 ME School-4*	May-06 toDec-07 Jan-07 to Dec-07	1X2500X20=50,000 4X12X2500=120,000	00 00
8	Additional Teacher-4* (Shantipur-1&Garughutu-1,Donsruag-1,Anthaibari-1)	Jan-07 to Dec-07	4X1000X12=48,000	00
Total			**10,46,000**	**00**

Note: * From Jan07 few more teachers will be appointed.

II. Mid Day Meal Program:

Sl No.	Particular	Detail	Amount	
9	A. 900 Student Rs.5/- Per Student for 45 days * B. 1100 Students Rs.5/- Per Student for 270 Days**	Nov-06 to Dec-06 Jan-07 to Dec-07	900X5X45= 202,500 1100X5X270= 1,485,000	00 00
10	Transportation	Do	10,000	00
Total			**1,697,500**	**00**

Note: * We assumed that 900 children out of 951 will attend school. (Working days 45 in 2 months)

** We assumed that 1100 Children out of expected 1165 will attend school. (Working days 270 in one year)

III. Training Program:

Sl No.	Particular	Detail	Amount	
11	Teacher Training Twice in a year (40 Persons) Per person's expenditure Rs-60/- daily including Resource person & Staff member. (Month- July 07 & Dec 07)			
A	Food-7 days	@60 per day	7X40X60=16,800	00
B	Resource Persons Fees-2	@1000 per day	2X7X1000=14,000	00

C	Accommodation, & Travel Air and Bus. Including Resource persons, Teachers etc.	20,000	00
	Total expenditure for one time	50,800	00
	Next Time expenditure	50,800	00
Total		**1,01,600**	**00**

IV. Other Requirements:

Sl No.	Particular	Detail	Amount	
12	Shishu Mela	Participants Student & Parents –500		
A	Food	Each participants Rs-40/- for 3 days	40X3X500=60,000	00
B	Transportation	Bus –2 times (2X 10000/-)	20,000	00
C	Additional	Including Magazine print, Mike, Tent for 3 days.	20,000	00
13	Play Materials at 13 School Center	Each center-Rs-1500 X13	13X1500=19,500	00
14	Musical Instrument	For Satayanarayanpur center	5,000	00
15	Office Stationary	Per Month-1000. From Nov-06 to Dec-07 (14 Months)	1000X14=14,000	00
16	School Stationary			
A	Paper	Each center-1000 X 13 Centers	1000X13=13,000	00
B	Copy	Total	10,000	00
C	Chalk, Register book etc.	Each center-500 X 13	500X13=6,500	00
D	Black Board-20 Piece	@400/-	400X20=8,000	00
17	Education Material-500	Books for school children each Rs-100.(Except Balwadi)	500X100=50,000	00
18	Health care, Medical checkup, Weight Machine-12 Centre	Satyanaryanpur : 6000/- Rest 12 centers X 3000 = 36000/-	42,000	00
19	Teachers Monthly Meeting.	Per Month Expenditure-Rs-500 X 14 Months	500X14=7,000	00
20	Celebration	National Festival Expenditure for 3 times (15th Aug / 26th Jan / 2nd Oct)	1000X3X12=36,000	00
21	Telephone & Internet	Nov-06 to Dec-07 @3000/-PM	3000X14=42,000	00
22	Electricity	Do @ 500/- PM	500X14=7,000	00
23	Office Rent	Do @ 2000/- PM	2000X14=28,000	00
24	Postage	Do @300/-PM	300X14=42,00	00
25	Newspaper	Do @300/-PM	300X14=42,00	00
26	Furniture	Almira, Table, Chair, Water Filter	20,000	00
27	Miscellaneous		10,000	00
28	Traveling Local & outside	Including Assam, Asha Meetings & other Conferences	4000X14=56,000	00
29	Two Wheeler-2	For Monitoring Center and SHGs	43000X2=86,000	00
30	Bi-Cycle-4	For Volunteers	2500X4=10,000	00
Total			**5,78,400**	**00**

Budget Summary:

1. Honorarium of Staff- = 447,000.00

2. Honorarium of Teachers- = 1,046,000.00

3. Mid Day Meal Program- =1,697,500.00

4. Training Program- = 101,600.00

5. Others- = 578,400.00

Grand Total ***Rs.3,87,0500.00*** *For April 06- December 07*

MEMBERS OF 'ASHA ASSAM' (Education Program)

S.No	DESIGNATION	NAME	Honorarium (PER MONTH)
1	Project Coordinator	Biju Borbaruah	7000.00
2	Educational Coordinator	Pranati Dhar	3000.00
3	Organizer	Himani Boro	3000.00
4	Organizer	Ambika Hajong	3000.00
5	Organizer	Meena Rabha	3000.00
6	Organizer	Sabita Roy	3000.00
7	Primary Teacher at Lakinarayanpur	Dulaal Mitra	2300.00
8	Primary Teacher at Namti	Kamal	2300.00
9	Primary Teacher at Satyanarayanpur	Naresh	2300.00
10	Primary Teacher at Satyanrayanpur	Bimal	2300.00
11	Primary Teacher at Satyanarayanpur	Bodreshwar	2300.00
12	Primary Teacher at Shantipur 2nd	Dilip	2300.00
13	Assistant Teacher at Satyanaranpur	Prabhat	1800.00
14	Assistant Teacher at Satyanaranpur	Geeta	1800.00
15	Assistant Teacher at Namati	Jadab	1800.00
16	Assistant Teacher at Shantipur 2nd	Savitri	1800.00
17	Assistant Teacher at Lakhinarayanpur	Neelima	1800.00
18	Assistant Teacher at Singramari	Maloti	1800.00
19	Assistant Teacher (New)	For Shantipur 2nd	1800.00
20	Balwadi Teacher at Hajangbasti	Prajola	1500.00
21	Balwadi Teacher at Hajangbasti	Champa	1500.00
22	Balwadi Teacher at Khumguri	Ansoli	1500.00
23	Balwadi Teacher at Khumguri	Basanti	1500.00
24	Balwadi Teacher at Anthaibari	Beena / New teacher	1500.00
25	Balwadi Teacher at Nagapur	Urmila	1500.00
26	Balwadi Teacher at Nagapur	Lakshmi	1500.00
27	Balwadi Teacher at Amlaigur/Dansrang	Hironi	1500.00
28	Balwadi Teacher at Namati	Meena	1500.00
29	Balwadi Teacher at Paharpur	Reeta	1500.00
30	Middle Education Teacher at Satyanarayanpur	Bedbahadur	2500.00
31	Middle Education Teacher –New	For Satyanaranpur	2500.00
32	Middle Education Teacher-New	For Satyanaranpur	2500.00
33	Middle Education Teacher-New	For Lakhinarayanpur	2500.00
34	Middle Education Teacher-New	For Lakhinarayanpur	2500.00
35	Additional Teacher-New	For Shantipur 1st	1000.00
36	Additional Teacher-New	For Garughutu	1000.00
37	Additional Teacher-New	For Anthaibari	1000.00
38	Additional Teacher-New	For Donsrang	1000.00